







## बढ़ सकती है अखिलेश यादव और असदुद्दीन ओवैसी की मुश्किलें

### 14 फरवरी को कोर्ट सुना सकता है फैसला



वाराणसी, 1 फरवरी (एजेंसियां)। श्रूता गोरे और ज्ञानवारी केस में हट स्पैच मामले को लेकर एआईएम-एम चीफ असदुद्दीन ओवैसी उनके भाई व सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव के खिलाफ वाराणसी के एमपी-एमएलए कोर्ट में एक बाद दखिल किया गया था। इस मामले में कई सुनावाइं ने बाद बहस पूरी हो गई। जिसके बाद अदालत ने फैसला सुनिश्चित रखते हुए 14 फरवरी को तारीख निर्धारित की है। यदि वे फैसला वादी पक्ष के हक में आता है तो ओवैसी व सपा सुप्रीमो पर एफआईआर दर्ज होने के साथ 5 साल तक की सजा भी हो सकती है।

**मरते दम तक तेज़ साधन छोड़ेंगे!**  
बॉयफ्रेंड ने किया सुसाइड तो गलफ्रेंड ने भी खा लिया जहर

मथुरा, 1 फरवरी (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के मथुरा के मंट थाना इलाके के मंट मूल से एक सनसनीखेज वारात समेत आई है। जिसके एक युवक ने फांसी के फंदे पर लटक कर अपनी जान दे दी, तो दूसरी तरफ एक लड़की ने जहर खा लिया। जिसके चलते उसको हालत गंभीर बताई जा रही है। हालांकि जब इस बात की सूचना पुलिस को पता लगी तो मौके पर पहुंचे पुलिस ने युवक के शव को पंचनामा भर पोस्टमार्टंड के लिए भेज दिया है। वहाँ लड़की को आनन्दानामें भर्ती कराया गया है। जहाँ उसको हालत गंभीर बताई जा रही है। मथुरा के मंट थाना क्षेत्र के मंट मूल में उस वक्त हड्कंप मच गया जब युवक का शव फांसी पर लटका हुआ मिला, मृतक युवक का नाम सत्यवान उर्फ़ छांगा उम्र 27 वर्ष वाला जा रहा है। उसने गंगा के दृश्यवाले के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, वहाँ दूसरी तरफ 22 वर्षीय युवती द्वारा जहर खाकर जान देने का मामला भी प्रकाश में आया है। जिस को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहाँ उसका इलाज चल रहा है वहाँ देखा जाए तो दोनों घटनाओं को स्थानीय लोग प्रेम प्रसंग से जोड़ रहे हैं, और आपस में कई चर्चा कर रहे हैं।



लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शाहरुख खान की 'पठान' फिल्म की जमकर तारीफ की है। अखिलेश यादव ने ट्वीट कर कहा कि, "पठान का सुपर हिट होना देश और दुनिया में सकारात्मक सोच की जीत है। बीजेपी की नकारात्मक राजनीति को जनता का करारा जवाब।" कई हिंदूवादी संगठनों से जड़ीं साथी प्राची फिल्म 'पठान' का लगातार विरोध कर रही हैं। जब फिल्म रिलीज हुई थी, तब भी साथी प्राची का विरोध सामने आया था। उन्होंने ट्वीट कर लिखा था कि, "सभी को फिल्म का बहिराकर करना है।" फिल्म लिंजा होने के बाद साथी प्राची ने एक अच्यूटी रूप में लिखा था कि, "आखिलेश कर्फ्फू पहुंच पठान। धन्यवाद सनातनियों।" वहाँ लड़की को आनन्दानामें भर्ती कराया गया है। जहाँ उसको हालत गंभीर बताई जा रही है। मथुरा के मंट थाना क्षेत्र के मंट मूल में उस वक्त हड्कंप मच गया जब युवक का शव फांसी पर लटका हुआ मिला, मृतक युवक का नाम सत्यवान उर्फ़ छांगा उम्र 27 वर्ष वाला जा रहा है। उसने गंगा के दृश्यवाले के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, वहाँ दूसरी तरफ 22 वर्षीय युवती द्वारा जहर खाकर जान देने का मामला भी प्रकाश में आया है। जिस को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहाँ उसका इलाज चल रहा है वहाँ देखा जाए तो दोनों घटनाओं को स्थानीय लोग प्रेम प्रसंग से जोड़ रहे हैं, और आपस में कई चर्चा कर रहे हैं।

## अखिलेश ने की 'पठान' की तारीफ

### साथी प्राची बोलीं- 'टोटी चोर का हारना हिंदूत्व की जीत'

इस फिल्म में लीड रोल में हैं। पठान की रिलीज को लेकर कई जगहों पर प्रदर्शन किए गए थे। हालांकि, फिल्म देखने के लिए एटिटॉडे में लोगों की भारी भीड़ देखी गई।

**'बेशंरं रंग' गाने को लेकर श्रृंग हुआ था विवाद**

फिल्म को लेकर बवाल इसके एक गाने 'बेशंरं रंग' की रिलीज के साथ शुरू हुआ था। इस गाने में दीपिका पादुकोण के कपड़ों को लेकर हिंदूवादी संगठनों में धैर्याने के बाबत लोगों ने एक अच्यूटी रूप में लिखा था कि, "आखिलेश कर्फ्फू पहुंच पठान। धन्यवाद सनातनियों।" वहाँ रामानंद संस्कृति में इससे हिंदुओं की भावनाएं आहत हो गईं।



हुई है, क्योंकि यह रंग हिंदुओं से जुड़ा है। शाहरुख खान की सुरुहित फिल्म पठान ने छह दिनों में दुनिया भर में 591 करोड़ रुपए की कमाई कर ली है। कंपनी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। कंपनी ने बताया कि फिल्म ने छठे दिन घरेलू बाजार में 32 करोड़ (हिंडी 25.50 करोड़) रुपये कमाएं हैं। वहाँ, विदेशों में फिल्म ने 16 करोड़ रुपये की कमाई की है।

### महिला की गला दबाकर हत्या, परिजनों का आरोप- भाभी के इश्क में पत्नी को मार डाला

रोहतस, 1 फरवरी (एजेंसियां)। बिहार के रोहतस में एक विवाहिता की हत्या का मामला समने आया है। परिजनों के मुालिक महिला के पति ने गला दबाकर उसकी जान नीचोंनी नीतीश कुमार की चुप्पी के अपराधों के बढ़ावा के बाबत रहे हैं। कुशवाहा पिछले साल बीजेपी के समेत अन्य विरोधी दलों ने सपा पर जमकर जुबानी हमला लोगे। अब भारतीय किसान युनियन (बीकेप्यू) के नेता राकेश टिकैत की प्रतिक्रिया आई है।



लिंगपत्रों नेता ने यह भी कहा कि नीतीश कुमार अक्सर जनता के बीच कुछ घटनाओं को लेकर दावा करते हैं। उन्होंने तो इस बारे में तात्परी नहीं है। चिराग ने कहा कि वह भाजपा से दोबारा हाथ मिलाने के बजाय मर जाना पसंद करेंगे। इससे पहले भाजपा ने कहा था कि नीतीश के साथ अब कोई

किंवदं जानता है। इससे जनता के बाबत लोगों को भाजपा की आपराधिकी के बढ़ावा के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। इससे जनता के बाबत लोगों को भाजपा की आपराधिकी के बढ़ावा के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अनुशासन कमेंटों को भेजे गए नोटिस का बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्हें पद छोड़ देना चाहिए। चिराग ने संसद में राष्ट्रपति द्वारा पूर्व मुर्मू के अधिभाषण की भी प्रशंसा की।

करना और छोड़ना उनकी संस्कृति का हिस्सा है। इसी तरह का व्यवहार उन्होंने जारी फार्नार्डीज और शरद यादव के साथ किया था। वह उपेन्द्र कुशवाहा के साथ भी इसी तरह का बताव कर रहे हैं। कुशवाहा पिछले साल बीजेपी के समेत अन्य विरोधी दलों ने सपा पर जमकर जुबानी हमला लोगे। अब भारतीय किसान युनियन (बीकेप्यू) के नेता राकेश टिकैत की प्रतिक्रिया आई है।

लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। स्वामी प्रसाद मौर्य के बाद समाजवादी पार्टी के एक और नेता दिव्यांशु रामचरितमानस को हम सलाला धर्म में विश्वास करता है। जिससे समाज में बैर बरवारी का और भ्रेत भाव का संदेश जाता है। इससे जनता के बाबत लोगों को भाजपा की आपराधिकी के बढ़ावा के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अनुशासन कमेंटों को भेजे गए नोटिस का बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्हें पद छोड़ देना चाहिए। चिराग ने संसद में राष्ट्रपति द्वारा पूर्व मुर्मू के अधिभाषण की भी प्रशंसा की।

लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। स्वामी

प्रसाद मौर्य के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अनुशासन कमेंटों को भेजे गए नोटिस का बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्हें पद छोड़ देना चाहिए। चिराग ने संसद में राष्ट्रपति द्वारा पूर्व मुर्मू के अधिभाषण की भी प्रशंसा की।

लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। स्वामी

प्रसाद मौर्य के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अनुशासन कमेंटों को भेजे गए नोटिस का बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्हें पद छोड़ देना चाहिए। चिराग ने संसद में राष्ट्रपति द्वारा पूर्व मुर्मू के अधिभाषण की भी प्रशंसा की।

लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। स्वामी

प्रसाद मौर्य के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अनुशासन कमेंटों को भेजे गए नोटिस का बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्हें पद छोड़ देना चाहिए। चिराग ने संसद में राष्ट्रपति द्वारा पूर्व मुर्मू के अधिभाषण की भी प्रशंसा की।

लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। स्वामी

प्रसाद मौर्य के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अनुशासन कमेंटों को भेजे गए नोटिस का बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्हें पद छोड़ देना चाहिए। चिराग ने संसद में राष्ट्रपति द्वारा पूर्व मुर्मू के अधिभाषण की भी प्रशंसा की।

लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। स्वामी

प्रसाद मौर्य के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अनुशासन कमेंटों को भेजे गए नोटिस का बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्हें पद छोड़ देना चाहिए। चिराग ने संसद में राष्ट्रपति द्वारा पूर्व मुर्मू के अधिभाषण की भी प्रशंसा की।

लखनऊ, 1 फरवरी (एजेंसियां)। स्वामी

प्रसाद मौर्य के बाबत लगातार चर्चा में बने हुए हैं। उन्होंने अ



## ਵਿਵੇਕ ਖੋ ਹੁਕੇ ਤਾਂਗਦਿਲ ਨੇਤਾ

अपने देश में कुछ नेता कितने तंगदिल हो गए हैं कि उनका विवेक ही काम करना बंद कर चुका है। वोट की खातिर ऐसे नेता कुछ भी करने को तैयार हैं। यहां तक कि जनाधार बढ़ाने के लिए वे समाज में जहर घोलने से भी नहीं चूंकरे वाले हैं। इसका परिणाम कितना घातक हो सकता है वे इसका भी परवाह नहीं करते। उत्तर प्रदेश में ओबीसी नेता हैं स्वामी प्रसाद मौर्य। आजकल समाजवादी पार्टी में हैं। इसके पहले वे बसपा व भाजपा सरकार में मंत्री तक रह चुके हैं। इन दिनों इन्हें ओबीसी वोट की चिंता बहुत सता रही है। इसलिए अपनी बदजुबानी से भी परहेज नहीं करते। उनके भड़काऊ भाषण की वजह से ओबीसी ने एक महासभा आयोजित कर यूपी की राजधानी लखनऊ में रामचरित मानस के पन्ने जलाने का कुकृत्य किया है। इसमें समाजवादी पार्टी के एक वरिष्ठ नेता भी शामिल हुए। अब इस मामले में दस लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। कुछ लोग तो गिरफ्तार भी कर लिए गए हैं। जाहिर है ऐसे लोगों के इस कृत्य के पीछे की मंसा छिपी नहीं है। काफी समय से मानस की कुछ चौपाइयों को लेकर सवाल खड़े कर उन्हें समाज के हाशिये के लोगों के प्रति अपमान के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। उन चौपाइयों की अपने-अपने तरीके से व्याख्याएं भी हो रही हैं, लेकिन उनके आधार पर हिंदू धर्म की आस्था का केंद्र पूरे रामचरित मानस का अनादर करने का प्रयास किसी भी रूप में उचित नहीं कहा जा सकता। मानस के सुंदरकांड की एक चौपाई में ‘नारी’ और ‘शूद्र’ को लेकर अपमानजनक भाव ध्वनित होता है। उसी को आधार बना कर इन दिनों हिंदू समाज के कुछ लोगों को अपने पक्ष में करने की राजनीतिक सोच पैदा की जा रही है। अब ऐसी समझ पर तरस आने के सिवा क्या कहा जा सकता है। एक या कुछ चौपाइयों के आधार पर जन-जन में स्थापित रामचरित मानस की प्रतिष्ठा को ही मटियामेट करने का कदम उठा लिया गया है। देखा जाए तो भारतीय समाज में किसी रचना में व्यक्त विचारों से असहमति की बहुत पुरानी परंपरा रही है। वेदों तक में व्यक्त सिद्धांतों की जहां कुछ लोग सही ठहराते हैं तो काफी लोग आलोचना भी करते विचारादेते हैं। तेंदुओं से अनेक में निन्दा नहीं करेगा यह पुराने शाहाबाद (उसके बाद भोजपुर, अभी बक्सर जिला) के राजापुर गांव के थे जहां उनके वंशज अभी भी वर्तमान हैं। इस गांव के निकट कर्मनशा नाम एक छोटी सी नदी है और वहीं के लोग इसका नदी के रूप में उल्लेख कर सकते हैं। इसी क्षेत्र के लिये काशी पश्चिम और मगध उत्तर है और इस अर्थ में विपरीत है। तुलसीदास जी की १०वीं पीढ़ी में पण्डित रामगुलाम द्विवदी संस्कृत के विष्ण्वात विद्वान् थे, पर तुलसी परम्परा में ही उन्होंने केवल लोकभाषा भोजपुरी में ही लिखा, मुख्यतः सामाजिक सुधार के लिये कई नाटक और कवितायें। उनके पौत्र जगदीश द्विवेदी १९६२ में ग्राम (आरा के निकट पैगं) में ग्रामसेवक थे, उनके पास तुलसीदास की वंशवाली थी। उनके पास ग्रियर्सन और बिहार नागरी प्रचारणी सभा, आरा से प्रकाशित शिवनन्दन सहाय लिखित तुलसीदास की जीवनी भी थी। 1915 की यह पुस्तक राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा पुनः प्रकाशित हुयी है, 1990 में। मेजर ग्रियर्सन 1858 में कुंवर सिंह के विद्रोह क्षेत्रों में व्यापक नरसंहार करने वालों में से थे, जिसके बाद इस क्षेत्र के निवासियों को मारिशस, फिजी, गुयाना आदि मजदूर या गुलाम बना कर भेजा गया। उनको गिरमिटिया (ऐग्रीमेण्ट वाले) मजदूर कहते थे पर वे भारत नहीं लौट सकते थे, अतः गुलाम ही थे।

भारत से बाहर जाते समय भी आरा से आजमगढ़ तक के लोग तुलसीदास की रचनाओं रामचरितमानस और हनुमान चालीसा ही ले गये जो उनकी आत्मिक रक्षा का आधार बना। इससे ग्रियर्सन आदि अंग्रेजों को बहुत चिढ़ हुयी और उन्होंने तुलसीदास को ही भोजपुरी क्षेत्र से सुदर पश्चिम बान्दा जिले में खिसका दिया। अपने दीर्घ

जानाना लाग जाताथा ना परता दृढ़ाइ दा हा वदा स जाना  
दार्शनिक पद्धतियां विकसित हुई हैं। विचारों का संघर्ष कोई बुरी बात  
नहीं, मगर जब इस तरह किसी कृति को जला कर उसका विरोध किया  
जाता है, तो उससे ऐसा करने वालों की तंगनजरी जाहिर होती है। ऐसे  
में तुलसीदास रचित रामचरितमानस भी आलोचनाओं से परे नहीं माना  
जा सकता। इतिहास में दर्ज है कि खुद तुलसी को अपने जीते-जी भी  
अनेक विद्वानों के वैचारिक प्रहार झेलने पड़े थे। ऐसे में विचारों का  
जवाब विचारों से दिया जाए तो बेहतर होता है। न कि उससे संबंधित  
कृति हो ही जला दिया जाए। इससे यह भी जाहिर हुआ है कि जिन लोगों  
ने मानस की प्रतियों का दहन किया, उनके पास विरोध की वैचारिक  
क्षमता खत्म हो चुकी है। ऐसे लोगों का विरोध समाज में कोई स्थायी  
प्रभाव नहीं छोड़ता, उल्टा यही संदेश पुख्ता होता है कि ऐसे लोगों को  
नेतृत्व देना जोखिम भरा हो सकता है। लेकिन समाज को बांट कर  
अपनी राजनीति चमकाने वाले इतनी महीन रेखा को कहां पहचान पाते  
हैं। समाजवादी पार्टी का जनाधार एक खास जाति-वर्ग तक सिमटा हुआ  
है, इस तरह की बयानबाजी से वह दलित वर्ग को लुभाने का प्रयास  
करना चाहती है। ऐसे लोगों को सोच मजबूत करना होगा कि मानस  
केवल एक साहित्यिक कृति नहीं है। अब वह लोक आस्था का ग्रंथ है।  
मांगलिक कार्यों में लोग श्रद्धा के साथ उसका अखंड पाठ रखते हैं।  
बहुत सारे लोग उसकी पूजा करते हैं। लोक में जितनी प्रतिष्ठा मानस  
की है, उतनी शायद ही किसी और ग्रंथ की होगी। इसलिए समाजवादी  
पार्टी के नेताओं द्वारा रामचरित मानस की प्रतियों के दहन से लोक  
मानस आहत हुआ है। मानस का निरादर करके समाजवादी पार्टी का  
जनाधार विस्तृत तो हो नहीं पाएगा उल्टे कमजोर अवश्य हो जाएगा।  
जिस वरिष्ठ नेता ने मानस के पन्ने जलाए, वे पिछले विधानसभा चुनाव  
में ही भाजपा छोड़ कर समाजवादी पार्टी में शामिल हुए थे। इतनी जल्दी  
वे अपनी बौद्धिक परंपराओं और लोक आस्था के महत्त्व को भूल जाएंगे,  
ऐसा तो किसी ने सोचा भी नहीं होगा।

## जनजातीय मान्द

### अशोक “प्रवृद्ध”

महाप्रलय के पश्चात आदिवासी  
समुदाय की उत्पत्ति की कथा  
झारखण्ड प्रान्त के गुमला  
जिलान्तर्गत डुमरी प्रखण्ड के  
आकाशी ग्राम अवस्थित सिरासीता  
नाले से जुड़ी हुई है। सिरासीता  
नाले को ककड़ोलता के नाम से भी  
जाना जाता है। मान्यता है कि जब-  
जब पृथ्वी पर अधर्म और पाप में  
वृद्धि हुई है, तब-तब पृथ्वी पर  
प्रलय हुआ है। और उस प्रलय के  
बाद आदिवासी सरना धर्मवलंबियों  
का झारखण्ड के गुमला जिला के  
डुमरी प्रखण्ड के आकाशी ग्राम  
अवस्थित इस धार्मिक स्थल  
सिरासीता नाले ककड़ोलता से हुई  
है। अर्थात मानव की उत्पत्ति यहीं  
हुई है। नदियों, ब्रुक, ब्रुकलेट्स  
और जंगल से ये झारखण्ड राज्य  
के परिचमी सीमा पर स्थित इस  
स्थल के पूर्वी सीमा में गुमला जिला  
का चैनपर प्रखण्ड। उत्तर सीमा में  
है। इस मेले में  
असम, बंगाल  
ओडिसा, नेपाल  
झारखण्ड के  
लाखों आदिवासी  
प्रद्वालुओं की उत्तरी  
समाज के अगुवाएँ  
शामिल होते हैं।  
अर्चना कर मनोरंग  
की कामना करते हैं।  
मान्यता है कि जब-  
जब पृथ्वी पर अधर्म और पाप में  
वृद्धि हुई है, तब-तब पृथ्वी पर  
प्रलय हुआ है। और उस प्रलय के  
बाद आदिवासी सरना धर्मवलंबियों  
का झारखण्ड के गुमला जिला के  
डुमरी प्रखण्ड के आकाशी ग्राम  
अवस्थित इस धार्मिक स्थल  
सिरासीता नाले ककड़ोलता से हुई  
है। अर्थात मानव की उत्पत्ति यहीं  
हुई है। नदियों, ब्रुक, ब्रुकलेट्स  
और जंगल से ये झारखण्ड राज्य  
के परिचमी सीमा पर स्थित इस  
स्थल के पूर्वी सीमा में गुमला जिला  
का चैनपर प्रखण्ड। उत्तर सीमा में  
समय इस उद्धव  
असुर अवदान

## तोताराम जी के अजीब शौक

# तुलसीदास के बारे में भ्रम और दुष्प्राचार

**शिवानंद मिश्रा** तुलसादास न अपन जन्मस्थान के विषय में रामचरितमानस के आरम्भ में ही बहुत स्पष्ट निर्देश किया है। विपरीत पदार्थों की सूची में 2 जोड़े हैं- काशी-मग सुरसरि-क्रमनाश। तत्वार्थिता तैयार करने जैसे दाके तात्त्व तात्त्व आपार्थों की

१२६ वष के जावन म तुलसादास बान्दा क १०० टकमा-  
निकट भी कभी नहीं गये थे। उनसे सम्पर्क करने वाले  
रहीम और मीराबाई ने भी ऐसा कोई उल्लेख नहीं किया  
है कि वे बान्दा के आसपास भी कभी रहे हों। ग्रियर्सन  
ने उनको बान्दा जिले का सिद्ध करने के लिये केवल  
एक ही प्रमाण दिया है कि उनकी रचना अवधी में है।  
अवधी और भोजपुरी में बहुत कम अन्तर है, केवल २-  
४ शब्द ही ऐसे हैं जिनका प्रयोग भोजपुरी में ही होता  
है। तुलसादास ने रुद्रआ (आप), राउर (आपका) बाटे  
(वर्तते) आदि का प्रयोग प्रायः किया है जिनका प्रयोग  
केवल भोजपुरी में ही होता है।

बाद के कई संस्करणों में इन विशेष शब्दों को  
यथासम्भव बदलने की भी चेष्टा हुयी है"जो राउर  
अनुशासन पावौं, कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं" को 'जो

‘अपन अनुशासन पावा...’ आदि किया गया जहां छन्द को रखा जा सके। पर सभी स्थानों पर यह नहीं हो पाया। तुलसीदास प्रायः पूरे जीवन काशी के असी घाट पर रहे, वहां की लोकभाषा भोजपुरी ही है, वरन् काशी ही भोजपुरी भाषा या सरयूपारीण ब्राह्मणों का केन्द्रस्थल है, उसके चारों तरफ अग्निरूप अष्टमूर्ति शिव के 8 नगर थे, केन्द्र के काशी को मिलाकर इनको नवपुरिया भी कहा जाता है।

तुलसीदास की सभी जीवनियों में इनको सरयूपारीण

कहा गया है। यहां तक कि रामचन्द्र शुक्ल ने भी काशी और अपने जिला बलिया (काशी का पड़ोसी) के बदले आरा (शाहाबाद) को ही आदर्श भोजपुरी का क्षेत्र कहा है (उनका हिन्दी साहित्य का इतिहास)। इसका कोई आधार नहीं है, काशी-बलिया-आरा और गोरखपुर देवरिया की भी वही भाषा है केवल १३ कोस पर बानी बदले के अनुसार कुछ शब्दों की शैली बदल गयी है। इसका एकमात्र कारण लगता है कि काशी में ही तुलसीदास रहते थे, कहीं उनकी भाषा भोजपुरी न हो जाये। शिवनन्दन सहाय ने बान्दा जिला में जन्मभूमि होने का एक हास्यास्पद प्रमाण दिया है। बान्दा जिले में जन्मस्थान बनाने का एक ही कारण था कि उनको आरा-आजमगढ़ क्षेत्र से दूर किया जाय और

ग स वहा भा राजापुर नामक गाव मिल गया । ने पर इस नाम के गांव महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गत में भी मिल सकते हैं पर बान्दा से ग्रियर्सन का चल गया । ग्रियर्सन को बान्दा के राजापुर में 1880 बूढ़ी स्त्रियां मिलीं थीं जिन्होंने कहा कि तुलसीदास नन्म इसी गांव में हुआ था । कोई पुरुष नहीं मिला । वे स्त्रियां इतनी बूढ़ी थीं (प्रायः 500 वर्ष की) कि न सामने तुलसीदास का प्रसव हुआ था? तुलसीदास रम मित्र रहीम अकबर के दरबारी और कृष्णभक्त थे । उनके पिता बैरम खान ने १३ वर्ष के अकबर राजा बनवाया था, वह स्वयं भी बन सकता था पर मूँ की स्वामी भक्ति के कारण उसने अकबर को ही बनाया । तथापि उसके भविष्य में राजा बनने के बैरम की हत्या करवा कर उसकी पत्नी को अपने में डाल दिया तथा रहीम को भी अपनी नजर के ने रखा । रहीम के भी दो पुत्रों की हत्या करवा दी गई थी, जो उसके बावेदार नहीं हो सके । रहीम ने उसके अकबर से कहा कि उह्नें सत्ता नहीं चाहिये और कूट में सन्यासी बनकर रहना चाहते हैं- कूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेश । नविपदा परत है, सो आवत एहि देश ।

वे तुलसीदास के साथ कुछ समय रहे । अर्थात् तुलसीदास चित्रकृत में भी रहे थे । 1631 सम्वत में चैत्र भगवान राम का परब्रह्म रूप म स्तुत ह, कि उनका माया के कारण मिथ्या जगत भी सत्य जैसा दीखता है, जैसे रस्सी भी सांप जैसी दीखती है । तुलसीदास की यह ज्ञान दृष्टि बेकार गयी-इसका अर्थ यह लगाया कि वे पत्नी से मिलने के लिये इतने बेचैन थे कि छत से एक सांप लटक रहा था उसे रस्सी समझ कर उसी को पकड़कर चढ़ गये । सांप को रस्सी समझने का भ्रम हो सकता है, जबतक वह दूर है । पर उसे रस्सी की तरह पकड़कर नहीं चढ़ा जा सकता है । सांप न तो उतना लमा होगा, न उसकी पकड़ दीवाल पर उतनी मजबूत होगी, न वैसी चिकनी चीज को पकड़ा जा सकता है । सबसे पहले तो वह काट लेगा । वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामचरितमानस की एक साथ बात करें तो दोनों में कवि श्री राम की कथा ही कह रहे होते हैं । जैसे ही इन्होंने राम की कथा को आम जन तक पहुँचाने का प्रयास किया, वैसे ही इनका खुद का नाम भी अमर हो गया ।

अब अगर चाहें भी तो रामायण कहते ही वाल्मीकि या रामचरितमानस कहते ही तुलसीदास याद न आएं ये असंभव है । ये एक बार नहीं कई बार हुआ है । अच्छे दृंग से लिखने के बदले, अपनी मर्जी से तोड़ने-मरोड़ने, उसमें कहीं महाभारत तो कहीं दूसरी अनसुनी कहानीयां घुसेड़ने वाले आज कल के लेखक भी इसके नाम पर

न नवमी की रामचरितमानस पूर्ण होने पर वे ध्या गया थे, पुनः काशी लौट आये। व्यक्ति को तुलसीदास ने आर्थिक सहायता के लिये के पास भेजा था तो उनकी प्रशंसा में एक पंक्ति थी- सुरतिय नरतिय नागतिय, सब चाहति अस (अर्थात् सभी माताये रहीम जैसा धर्मात्मा पुत्र तीती हैं)। रहीम ने दूसरी पंक्ति जोड़कर इसे दीदास की प्रशंसा बना दी- लिये हुलसी फिरे, तुलसी से सुत होय। अर्थात् ऐसे को गोद लेकर प्रसन्नता से माता फिरती है। हुलसी का अर्थ है प्रसन्न, पर इस विच्छात पंक्ति गण तुलसीदास की माता का नाम हुलसी कर दिया है। इसी प्रकार रामचरितमानस के मंगलाचरण में उच्छी खासी प्रसिद्धि (और मुद्रा) बटोर ले जाते हैं। जहाँ नतीजे ऐसे साफ़, उदाहरणों में दिखें वहाँ अगर कोई पछे कि आज के समय में इसे पढ़ने, लिखने या सुन लेन का क्या फायदा? उसे मुकुराकर टाल देना चाहिए। आकार की दृष्टि से देखें तो दोनों ग्रंथों में बहुत अंतर है। जहाँ वाल्मीकि की रामायण बहुत वृहत है, तुलसीदास की रामचरितमानस उससे बहुत छोटी होती है। समय काल के हिसाब से दोनों में हजारों साल का अंतर है। तुलसी के काल तक वाल्मीकि के लेखन के आधार पर अनेकों रचनाएँ लिखी जा चुकी थीं। उनकी भाषा भी संस्कृत नहीं इसलिए उनके किये को अर्थ का अनुवाद और फिर उसमें कुछ प्रसंगों का बदलाव माना जा सकता है।

# जनजातीय मान्यताओं की प्रतीक सिराजीता धारा

## अशोक “प्रवृद्ध”

महाप्रालय के पश्चात आदिवासी समुदाय की उत्पत्ति की कथा ज्ञारखण्ड प्रान्त के गुमला जिलान्तर्गत डुमरी प्रखण्ड के आकाशी ग्राम अवस्थित सिरासीता नाले से जुड़ी हुई है। सिरासीता नाले को ककड़ेलता के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि जब-जब पृथ्वी पर अधर्म और पाप में वृद्धि हुई है, तब-तब पृथ्वी पर

प्रलय हुआ है। और उस प्रलय के बाद आदिवासी सरना धर्मावलबियों का झारखण्ड के गुमला जिला के डुमरी प्रखण्ड के आकासी ग्राम अवस्थित इस धार्मिक स्थल सिरासिता नाले ककड़ोलता से हुई है। अर्थात मानव की उत्पत्ति यहाँ हुई है। नदियों, ब्रुक, बुकलेट्स और जंगल से घिरे झारखण्ड राज्य के पश्चिमी सीमा पर स्थित इस स्थल के पूर्वी सीमा में गुमला जिला का चैनपर प्रखण्ड उत्तर सीमा में ही पूर्ण होती है सिरासीता धर्मावलित अनेक किञ्चिदनियाँ प्राप्ति माती, सोखा विभिन्न धार्मिक जनजाति समुदाय संबंधित धर्म ग्रन्थ दंडा- कट्टा या समय इस उद्धरण असुर अवदान

बेहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, न के अतिरिक्त वेबिन्न जिलों से शामिल होते हैं। मट्डी भीड़ के साथ धर्म गुरुगण भी श्रद्धालु जन पूजा-वालित फल प्राप्ति की है, याचना करते कि यहाँ जो भी नी है, वह अवश्य की बारी आई। बुढ़िया के पुत्र का नाम धर्मेंस (धर्मस) था, और उसकी बहूँ अर्थात् धर्मस की पत्नी का नाम पार्वती था। बुढ़िया ने रोकर अपने पुत्र को जाने से मना किया, परन्तु उसके पुत्र ने नहीं मानी और 12 मन की तलवार उठाई, तेरह मन का भला लिया। और जब छकड़े को चावल से भरकर चला तो राक्षस को तीन कोस दूर से ही बैलगाड़ी की घंटी की भयानक आवाज सुनाई पड़ने दिन धर्मेंस के न होते कोई भूख ने अगि आण दी। प्रसाद तब

और 7 रात जीवित रहे। तब वह ने पार्वती से कहा कि प्रसाद चढ़ावे से ही देवताओं का भोजन है और प्रसाद चढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं होने के कारण मैं से मर रहा हूँ। इस पर पार्वती कहा मैंने आपसे थोड़ी पार्वर्षा की प्रार्थना की थी, किन्तु मैंने अत्यधिक अग्निवर्षा कर अब मनुष्य कहां मिलेंगे, जो चढ़ावे का चढ़ावा चढ़ाने आएंगे? यद्यमें ने पार्वती से प्रार्थना की।

मध्य प्रदेश और राजस्थान सीमा पर शनिवार सुबह हुए भारतीय वायुसेना के दो विमानों का क्रैश होना खासा चिंताजनक है। हादसे में दो पायलट तो किसी रह बच गए, लेकिन एक की मौत हो गई। चौंक दोनों लड़ाकू विमानों सुखोई-30 और मिराज-2000 ग्वालियर एयरबेस से रूटीन ट्रेनिंग के लिए उड़ान भरी थी, दोनों के दुर्घटनाग्रस्त होने का समय भी एक ही समय तक है जबकि दोनों

रिप्यूलिंग करने के बाद यह 8000 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकता है। मगर इस तक के हादसों में जो बहादुर पायलट सैनिक और सैन्य अफसर शहीद होते हैं, उनकी कमी तो कभी पूरी ही नहीं हो पाती है। तमिलनाडु कन्नूर में दिसंबर 2021 में हुए ऐसे ही एक हेलिकॉप्टर क्रैश देश ने तत्कालीन सीडीपी जनरल विपिन रावत को खो दिया। उस वर्षात भारत में एक और

पार्वती ने बताया कि दो प्राणी वैद्य में छुपे हैं। यह सुन की छड़ी लेकर धर्मेश चौहान एक पक्षी, कुत्ते लिलि, भूली खेरी के साथ भैया बहन को निकले। तब कुत्तों ने मिलकर बाड़ी के बीच केकड़े के पास भूकना शुरू किया। ने नर-नरी युग्म को पाया। और धर्मेश ने उन्हें हल बीज दिया। उनके लिए दिन-बनाए। लेकिन जब उन्होंने न की खेती शुरू की, तो एक टिड्डियाँ ने और दूसरी और चूहे नि पहुंचाने शुरू कर दी। इस धर्मेश ने इस भैया बहन युग्म से कि कृषि की रक्षा के लिए- कट्टा या भेलवाफारी पूजा चाहिए। इससे इस प्रकार की नहीं होगी इससे नजर -गुजर तो होगी। यह बताकर धर्मेश ने बहन के बीच लकड़ी का एक रखा दिया और कहा कि ओ गैरि! जब तुम इस लकड़ी के पार कर उस तरफ जाकर गें, तो मानव जाति बढ़ेगी। प्रकार प्रथम भैया बहन से जाति का विस्तार हुआ।

कड़ोलता से सम्बन्धित एक कथा के अनुसार संसार में में वृद्धि और धर्म का नाश होने तो इसे देख भगवान महादेव माता पर्वती को अत्यंत दुःख। यह देख माता पार्वती का दग्ध हो उत्ता।

कराब-कराब समान है आर दाना विमानों का मलबा भी आसपास के ही इलाकों में गिरा है, ज्यादा आशंका यही बताई जा रही है कि दोनों विमान हवा में ही एक दूसरे से टकरा गए होंगे। हालांकि इन विमानों की क्षमता और पायलटों के प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए विशेषज्ञ यह भी बताते हैं कि इनका इस तरह टकराना कोई सामान्य बात नहीं है। मामले की जांच के आदेश दे दिए गए हैं। ऐसे में विस्तृत जांच की रिपोर्ट से ही यह साफ होगा कि उड़ान के दौरान दोनों में से किसी एक या दोनों विमानों में किसी तरह की तकनीकी गड़बड़ी हुई थी या इस हादसे की कोई और वजह थी। लेकिन ऐसे लड़ाकू विमानों का दुर्घटनाप्रस्त होना बायु सेना के लिए बड़ी क्षति है। सुखोई-30 और मिराज-2000 दोनों ही बेहतरीन और सक्षम लड़ाकू विमानों में गिरे जाते हैं। मिराज-2000 ने करगिल युद्ध ही नहीं, सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान भी अहम भूमिका निभाई थी। एक मिराज-2000 की कीमत करीब 167 करोड़ रुपये पड़ती है जबकि एक सुखोई विमान की कीमत 500 करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ती है। सुखोई-30 विमान एक बार में 3000 किलोमीटर तक की उड़ाना दैर्घ्य हो जाती है।

था। उस दुघटना में उनक साथ हा 12 अन्य सेन्यकर्मी शहीद हुए थे।



# वायुसेना को नुकसान

# शांत होती ब्रह्मपूत्र से बलरखाती सोन तक

तकरीबन बीस घंटे के सफर के बाद ट्रेन से गुवाहाटी उतरा तो मेरे रिस्तेदार भास्कर स्टेशन पर थे, जो मुझसे कुछ ही साल छोटे हैं। गाड़ी में बैठे तो उन्होंने कहा, घर चलते हैं। मैं बोला, पहले ब्रह्मपुत्र चलते हैं। रात में ब्रह्मपुत्र पहुंचने के लिए पहले तो दोनों ने डेढ़ घंटे तक जाम झेला, फिर किसी तरह कैंट जाने वाला बाहरी किनारा पकड़ा। यहां रात में पहली बार मुझे ब्रह्मपुत्र के दर्शन हुए। अयोध्या की सरयू किनारे तो मैं जाने कितनी रातें बैठा हूं। सरयू कितनी भी बढ़ी हो, ऐसे कभी नहीं डराती, जैसे ब्रह्मपुत्र डराता है। इसकी जो वजह मेरी समझ में आई, वो यह कि गंगा हो या सरयू, यह नदियां बहती हैं तो किनारों से कल-कल की संगीत भी बहत है। ब्रह्मपुत्र एकदम खामोश था। कहीं कोई कल-कल नहीं। खामोशी का डर प्रत्यक्ष महसूस करना हो तो जाड़ों की रात ब्रह्मपुत्र के किनारे खड़ा होना बुरा आँडिया नहीं।

पिछली बार जब मैंने कहा कि ब्रह्मपुत्र शायद भारत की इकलौती पुरुष नदी है तो बड़े भाई

शोण ने जुहिला को सजे-धजे देखा तो राजकुमारी समझ उन्हें उसी से प्रेम हो गया। पीछे-पीछे नर्मदा भी पहुँचीं तो दोनों को साथ देखकर बिफर पड़ीं और तुरंत वहां से उल्टी दिशा को चल पड़ीं। आज भी सोन नाम का नद भौगोलिक रूप से नर्मदा का पीछा करता है, मगर एक जगह पर नर्मदा उससे एकदम विपरीत दिशा में चली जाती है। नदियों में सबसे पवित्र चिरकुंवारी नर्मदा को ही माना गया है। मत्स्यपुराण कहता है कि यमुना हप्ते भर में, तीन दिन में सरस्वती, गंगाजल उसी दिन और नर्मदा का पानी उसी पल पवित्र कर देता है। अपवित्र तो सोन को भी नहीं माना गया, बल्कि उसके किनारों पर आज भी छोटे-बड़े नहान होते रहते हैं। मैंने भास्कर से पूछा कि जिस तरह से हमारे यहां अयोध्या में मैले-मौकों पर नहान होते हैं, वैसा कोई सीन ब्रह्मपुर में बनता है? उन्होंने बताया कि यहां ऐसा कुछ नहीं होता बल्कि लोग मौज-मजे में भी ब्रह्मपुर में तैरने नहीं जाते। मैंने पूछा, ऐसा क्यों? वह बोला, इसकी खामोशी से

# महाकाल के दर्शन के लिए देने होंगे 250 रुपए

श्री महाकालेश्वर मंदिर उज्जैन में अब प्रोटोकॉल के तहत दर्शन करने के लिए जाने वाले दर्शनार्थियों को 250 रुपए का शुल्क चुकाना होगा। मंदिर प्रशासन ने यह व्यवस्था 1 फरवरी से लागू की है। हालांकि, शासन के प्रोटोकॉल में आने वाले अति विशिष्ट दर्शनार्थियों के लिए दर्शन व्यवस्था निःशुल्क ही रहेगी।

विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में अभी तक विभिन्न विभागों का प्रोटोकॉल के माध्यम से दर्शन करने के लिए काटा निर्धारित है। इस व्यवस्था के माध्यम से आने वाले श्रद्धालुओं को प्रोटोकॉल के तहत निःशुल्क रूप से शीघ्र दर्शन कराए जाते थे। प्रोटोकॉल व्यवस्था को समाप्त करने के लिए 27 जनवरी को हुई मंदिर प्रबंध समिति की बैठक में खाका तैयार कर निर्णय लिया गया था।

शुल्क को लेकर निर्धारण होना था।

सोमवार देर रात को इस व्यवस्था को 1 फरवरी से लागू करने का निर्णय लिया गया। अब प्रोटोकॉल व्यवस्था में शासन के प्रोटोकॉल की श्रेणी में आने वाले अति विशिष्ट अन्यथियों को ही निःशुल्क दर्शन करने की व्यवस्था रहेगी। इसके अलावा सत्कार व्यवस्था के अंतर्गत आने वाले दर्शनार्थियों से गजट प्रावधान के अनुसार 250 रुपए प्रति व्यक्ति रेट राशि लेने के बाद ही प्रवेश दिया जाएगा। मंदिर समिति ने यह व्यवस्था 1 फरवरी से मंदिर में लागू करने के सूचना भी जारी कर दी है।

## निःशुल्क प्रवेश की पात्रता इन्हें रहेगी

श्री महाकालेश्वर मंदिर में 1 फरवरी से लागू हो रही व्यवस्था में दर्शन के लिए आने वाले साधु, संत-मठत, महामंडलेश्वर, शंकराचार्य, पीठाधीश्वर, धर्मचार्य, प्रेस कलाब के सदस्य, अधिकार्यान्त्र प्राप्त पत्रकार (स्वयं) सत्कार व्यवस्था के अंतर्गत निःशुल्क शीघ्र दर्शन व्यवस्था से प्रवेश कर सकेंगे। इसके अलावा अति विशिष्ट व्यक्ति, जो शासन के प्रोटोकॉल श्रेणी में आते हैं, उन्हें भी निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त किसी भी माध्यम से कोई दर्शनार्थी प्रोटोकॉल के तहत दर्शन के लिए आते हैं, तो 250 रुपए प्रति व्यक्ति रसीद लेना अनिवार्य होगा।



## इसलिए समाप्त की प्रोटोकॉल व्यवस्था

श्री महाकालेश्वर मंदिर में मंदिर प्रशासन द्वारा अभी तक शासन के विभिन्न विभागों, प्रेस, न्यायिक विभाग, राजनीतिक दल के लिए प्रोटोकॉल के तहत दर्शन को जाने वाले श्रद्धालुओं का काटा निर्धारित किया गया था। इस व्यवस्था के बाद भी देखा गया कि जो श्रद्धालु प्रोटोकॉल के तहत व्यवस्था में नहीं आते थे, उन्हें भी निःशुल्क दर्शन कराए जा रहे थे। वहीं प्रोटोकॉल से दर्शन करने के नाम पर पैसे लेने की शिकायत भी मिलने लगी थी। इस कारण मंदिर की व्यवस्था बिंब रही थी। दूसरी पेशानी यह थी कि मंदिर में प्रोटोकॉल के तहत आने वाले दर्शनार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही थी।



## सामान्य श्रद्धालुओं को दर्शन सुविधा मिल सकेगी

श्री महाकालेश्वर मंदिर में सभी तरह की प्रोटोकॉल व्यवस्था समाप्त करने के बाद केवल अति विशिष्ट लोगों को ही प्रोटोकॉल के दायरे में रखा गया है। इस व्यवस्था के लागू होने के बाद माना जा रहा है कि प्रोटोकॉल से दर्शन के लिए जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या कम होगी। वहीं सामान्य श्रद्धालुओं को दर्शन करने में सहजता रहेगी। हालांकि, यह व्यवस्था कितने दिन चल सकेगी यह समय अनुसार ही तय हो पाएगा।

## पहले पांच महीने में वापस लिया था निर्णय

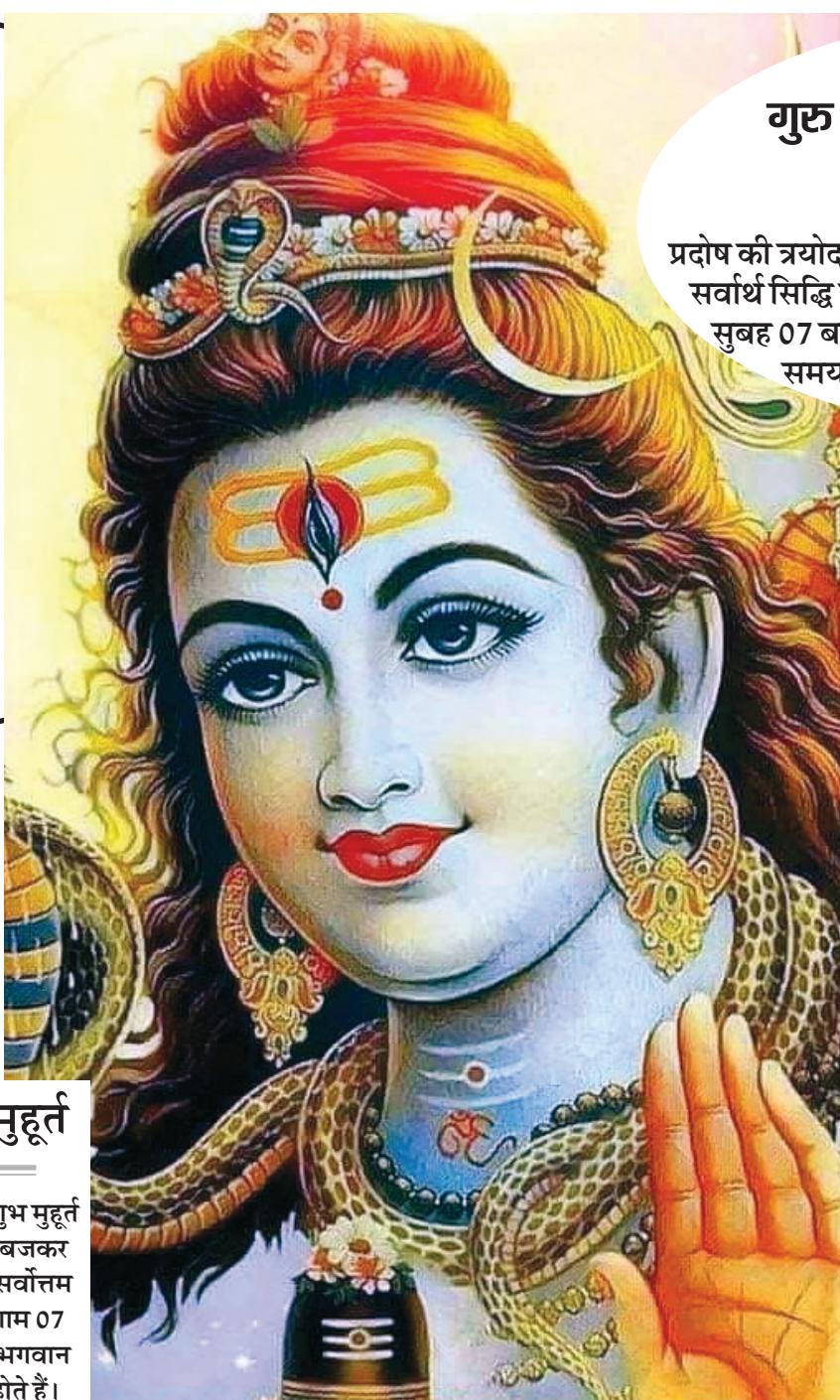
श्री महाकालेश्वर मंदिर में इसके पहले मंदिर प्रबंध समिति की बैठक 3 सितंबर 2021 में निर्णय लेकर प्रोटोकॉल पद 100 रुपए शुल्क लागू किया था। इसके लिए हरिकाटक ब्रिज के नीचे प्रोटोकॉल का नया आर्किस भी खोला गया था। शुल्क लगाने के विरोध के बाद कीरब पांच महीने बाद ही 16 कोरिकाल 2022 को प्रबंध समिति न महाशिवरात्रि पर्व के पहले महाकाल दर्शन के लिए वीआईपी दर्शनार्थियों के लिए लागू किया गए 100 रुपए शुल्क को समाप्त कर दिया है। साथ ही वीआईपी प्रवेश के लिए कुछ शर्तें भी लागू की हैं। प्रोटोकॉल के तहत आने वाले सदस्यों की समिति संख्या में प्रवेश दिया जाएगा।

# आज गुरु प्रदोष व्रत, अमृत-सर्वोत्तम मुहूर्त में करें शिव पूजा

## शिंगणापुर में क्यों नहीं होती चोरी?

विना ताले के सुरक्षित है हर एक घर

नवग्रहों में सबसे कूर ग्रह की संज्ञा शनि ग्रह को दी गई है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि जिन लोगों पर भी इसका साया पड़ता है, वह लोग अपनी जिंदगी में पतन का तरफ जाते हैं। जिन लोगों पर शनिदेव की वकी दृष्टि पड़ती है, उनका जीवन कठिन होता है। शनि देव को पुराणों में कर्मों का फल देने वाले देवत कहा जाता है। शनि देव अपने पूर्य देव की तरह ही तेजस्वी और गुरु भगवान शिव की तरह गंधीर माने गए हैं। भारतवर्ष में शनि शिंगणापुर शनि देव के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है, लेकिन बहुत कम लोग इस बात की जानते हैं कि शनि देव की मूर्ति वहां कैसे स्थापित हुई? वहां चोरी क्यों नहीं होती? इस विषय पर अधिक जानकारी दे रहे हैं भोपाल निवासी ज्योतिषी एवं वास्तु सलाहकार पंडित हितेंद्र कुमार शर्मा।



## गुरु प्रदोष व्रत पर बना है एवि योग और सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रदोष की त्रयोदशी तिथि में रवि योग और सर्वार्थ सिद्धि योग बना है। सर्वार्थ सिद्धि योग 03 फरवरी को सुबह 06 बजकर 18 मिनट से सुबह 07 बजकर 08 मिनट तक है। ऐसे ही रवि योग भी उसी समय 06:18 बजे से लेकर 07:08 बजे तक है।

## रुद्राभिषेक के लिए भी है शुभ दिन

02 फरवरी को गुरु प्रदोष व्रत का दिन रुद्राभिषेक के लिए भी शुभ है। इस दिन सुबह से ही कैलाश पर शिववास है, जो शाम 04 बजकर 26 मिनट तक है।

उसके बाद नंदी पर शिववास रुद्राभिषेक के लिए अच्छा माना जाता है।

## गुरु प्रदोष व्रत का महत्व

पौराणिक कथा के अनुसार, वृतासुर के आतंक से देवता गण परेशान थे। वह शिव भक्त था।

उसको पराजित करने के लिए देवराज इंद्र ने गुरु प्रदोष व्रत रखा और भगवान शिव की विधि विद्यान से पूजा की।

प्रसन्न होकर भगवान शिव ने इंद्र को शत्रु पर विजय का वरदान दिया।

इसके बाद इंद्र ने वृतासुर को हराकर स्वर्ग में शांति स्थापना की। इस वजह से दुश्मनों पर विजय प्राप्त करने के लिए गुरु प्रदोष व्रत रखा जाता है।



## शिंगणापुर में कैसे आई शनिदेव की प्रतिमा

शनि शिंगणापुर में शनि देव का बहुत प्राचीन मंदिर है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार साबन के महीने में बहुत अधिक चारिश की वजह से वहां का जलसर काफी बढ़ चुका था। तभी इस बारिश में बहते हुए एक काले रंग की विशाल शिला शिंगणापुर के तट पर पहुंची।

## मुखिया के सपने में आए

उसी रात शनिदेव उस गांव के मुखिया के सपने में आए और बताया कि शिला के रूप में वे स्वयं उस गांव में आए हैं। इस बात को सुनकर मुखिया प्रसन्न हुए और अगले दिन इस सपने के बारे में गांव के सभी लोगों को बताया। फिर उन सभी ने मिलकर विना इंतजार किए। शनिदेव को बैलगाड़ी में लेकर गांव के बीच में विराजमान किया, तब से यह प्रतिमा वहां पर स्थापित है।

## शिंगणापुर में क्यों नहीं होती चोरी

मान्यताओं के अनुसार जब से शिंगणापुर में शनि देव विराजमान हुए हैं, उसी दिन से वहां चोरी-डॉफॉनी जैसे वारदात नहीं हो पाए थे। पूर्व विश्व में एकलोना ऐसा गांव है, जहां घरों में आज भी दरवाजे नहीं हैं। कई बार लोगों ने वहां चोरी करने की कोशिश की, लेकिन वे नाकाम हुए हैं और उन्हें उसका परिणाम भी भुगतना पड़ा।

## कुंडली में कमजोर हैं राहु-केतु? पैर में काला धागा पहनने से मिलेंगे फायदे

पहनने से अर्थित स्थिति मजबूत रहती है।

कमजोर राहु-केतु के लिए ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जो जातक पैर में काला धागा करते हैं उन पर शनि की साधेसाती और दैवी का

प्राप्तव कम होता है।

कमजोर राहु-केतु के लिए ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जो कुंडली में राहु और केतु ग्रह कमजोर होते हैं, उन्हें अपने पैरों में काला धागा बांधने से लाभ मिलता है।

किस पैर में महिला बांधे काला धागा ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पैर के कहाना है फैशन में आकर्षक होने की कोशिश की जाती है। महिलाओं को हमेशा

बांधने से अंदर लेपत लेग में काला धागा बांधना

चाहिए। कन्या या महिला को हमेशा



स्वतंत्र वार्ता, हैदराबाद

गुरुवार, 2 फरवरी, 2023 9

## संतरे के बाद दूध, गाजर और पपीता है खतरनाक

ठंडी तासीर का फल होने के बावजूद सर्दी के मौसम में संतरा सेहत के लिए फायदेमंद माना गया है। इसमें विटामिन ए-बी-सी, कैल्शियम, मैनीशियम और पोटैशियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो सर्दियों में इम्यूनिटी को बूस्ट कर बीमारियों से बचाते हैं। स्वाद में लाजवाब संतरे को आंखों और रिस्कन के लिए भी फायदेमंद माना जाता है। लोग अक्सर नाश्ते के साथ फल या जूस के रूप में संतरे को लेना पसंद करते हैं।

अनेक गुणों से भरपूर संतरा,



सेहत के लिए खतरनाक भी हो सकता है। खासतर से तब जब इसे गलत तरीके से खाया जाए। संतरे को दूध, गाजर और पपीता के साथ, या एक तुरंत पहले या बाद खाना सेहत को नुकसान पहुंचाता है। ऐसे में संतरे को खाने के सही तरीके और सही वक्त को जान लेना जरूरी है।

आयुर्वेद के अनुसार हर फल की एक प्रकृति होती है। उसकी प्रकृति के हिसाब से ही उपरोक्त खाने के बाद दूध या दूध से बीच कोई भी चांद नहीं खाना चाहिए। इससे रिस्कन और डाइजेशन की साथ खाना या नहीं खाना है, वह



पपीता और गाजर भी नहीं हैं संतरे का लाभी

ठंड के मौसम में संतरे के अलावा गाजर और पपीता भी खूब खाएं जाते हैं। लेकिन इनका कॉर्जिनेशन ठीक नहीं है। संतरा खाने के आसपास पपीता और गाजर खाने से बचना चाहिए। अधिक उपाय्या बताते हैं कि संतरा के साथ या पपीते को खाने से पित्त-दौष हो सकता है। दोपहर है संतरा खाने का नुसीद अन्य

संतरे के सुवह या शाम को खाने से बचना चाहिए। जानकारी

भी उसकी प्रकृति पर निर्भर करता है।

संतरा खट्टी प्रकृति का होता है और आयुर्वेद में खट्टी चीजों को दूध के साथ 'जहर के समान' बताया गया है। ऐसे में संतरे को भोजन के बाद भी नहीं खाना चाहिए। ऐसे में लंच के थोड़ा पहले संतरा खाना सबसे बेहतर माना जाता है। संतरा खाने के आधे घंटे के भीतर कुछ और खाने से भी बचना चाहिए।

जानकारी

नमक के पानी से कुल्ला मुंह-पेट की बीमारियों से बचाएगा

सर्दी-जुकाम, कफ और फ्लू से बचे रहेंगे, सोने से पहले करना सबसे ज्यादा फायदेमंद



गूंजनी बीमारियों से बचाएगा

जकड़न से भी राहत मिलती है।

गुंज के पीपू लेवल को मेंटेन करता है

सापान्य रूप से मुंह का पीएच लेवल 6.3% होता है। इससे कम होना यानी मुंह में एसिड के लेवल का बढ़ जाना होता है। ऐसी स्थिति में दांत और मसूड़ों को उक्सान होना शुरू हो जाता है।

नमक का पानी मुंह के पीएच लेवल को बढ़ा कर मेंटेन करता है। जो ओरल हेल्थ के लिए काफी जरूरी है।

रात में सोने से पहले कुल्ला ज्यादा फायदेनंद

हल्के गुनगुने पानी में नमक

मिला कर कुल्ला की बोतल की जाग इसके

लिए रात में सोने से पहले का

वक्तव्य सबसे मुंहदेह होता है।

नॉर्मल नमक की जगह अगर सेंध नमक का इस्तेमाल किया जाए तो

युग्म या गम्भीर नुकसान होता है।

यह ज्यादा फायदेमंद होता है।

गुंज के साथ पेट और फेफड़ा भी देखा जुकाम

आमतौर पर माना जाता है कि नमक के पानी से कुल्ला करना सिक्की साथ मुंह के लिए जरूरी है।

इसके अलावा ऐसा करना सर्दी-जुकाम, कफ और फ्लू में भी राहत देता है। गर्भ पानी में चुट्की भर नमक मिलाकर कुल्ला करने से मुंह की सफाई और महकी साथ सेहत भी मजबूत होती है। ऐसे में इसके फायदे और सही तरीके को जान लेना जरूरी हो जाता है।

गुंज के साथ पेट और फेफड़ा भी देखा जुकाम

आमतौर पर माना जाता है कि नमक के पानी से कुल्ला करना सिक्की साथ मुंह के लिए जरूरी है।

फटे दूध के पानी में प्रोटीन, मिनरल्स और विटामिन

फेंके नहीं, आटा गूंथने, सब्जी बनाने और बाल धोने में करें इस्तेमाल; मजबूत होगी इम्यूनिटी

जानकारी

पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो सेहत के लिए काफी फायदेमंद है।

ऐसे में फटे दूध के पानी के फायदे और उसके इस्तेमाल के कुछ शानदार तरीके जानें।

गिनरल्स और विटामिन से भरपूर है फटे दूध का पानी

न्यूट्रिशनिस्ट बताती हैं-फटे हुए

दूध के पानी में-प्रोटीन, कॉलेहाइट्र, फेट, कैल्शियम और लैन्कट्रेट एसिड के अलावा

प्रचुर मात्रा में कई तरह के

प्रायोजन और विटामिन पाए जाते हैं।

इसका काफी जाहिर है कि दूध से

पर्याप्त बीमारियों से बचना चाहिए।

लेकिन फटे दूध का ये पानी बहुत काम करता है; साथ ही साथ इसमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन और लैन्कट्रेट एसिड जैसे

पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो सेहत के लिए काफी फायदेमंद है।

ऐसे में फटे दूध के पानी के फायदे और उसके इस्तेमाल के कुछ शानदार तरीके जानें।

गिनरल्स और विटामिन से भरपूर है फटे हुए

दूध के पानी में-प्रोटीन, कॉलेहाइट्र, फेट, कैल्शियम और लैन्कट्रेट एसिड के अलावा

प्रचुर मात्रा में कई तरह के

प्रायोजन और विटामिन पाए जाते हैं।

इसका काफी जाहिर है कि दूध से

पर्याप्त बीमारियों से बचना चाहिए।

लेकिन फटे दूध का ये पानी बहुत काम करता है; साथ ही साथ इसमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन और लैन्कट्रेट एसिड जैसे

पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो सेहत के लिए काफी फायदेमंद है।

ऐसे में फटे दूध के पानी के फायदे और उसके इस्तेमाल के कुछ शानदार तरीके जानें।

गिनरल्स और विटामिन से भरपूर है फटे हुए

दूध के पानी में-प्रोटीन, कॉलेहाइट्र, फेट, कैल्शियम और लैन्कट्रेट एसिड के अलावा

प्रचुर मात्रा में कई तरह के

प्रायोजन और विटामिन पाए जाते हैं।

इसका काफी जाहिर है कि दूध से

पर्याप्त बीमारियों से बचना चाहिए।

लेकिन फटे दूध का ये पानी बहुत काम करता है; साथ ही साथ इसमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन और लैन्कट्रेट एसिड जैसे

पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो सेहत के लिए काफी फायदेमंद है।

ऐसे में फटे हुए दूध के पानी के फायदे और उसके इस्तेमाल के कुछ शानदार तरीके जानें।

गिनरल्स और विटामिन से भरपूर है फटे हुए

दूध के पानी में-प्रोटीन, कॉलेहाइट्र, फेट, कैल्शियम और लैन्कट्रेट एसिड के अलावा

प्रचुर मात्रा में कई तरह के

प्रायोजन और विटामिन पाए जाते हैं।

इसका काफी जाहिर है कि दूध से

पर्याप्त बीमारियों से बचना चाहिए।

लेकिन फटे हुए दूध का ये पानी बहुत काम करता है; साथ ही साथ इसमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन और लैन्कट्रेट एसिड जैसे

पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो सेहत के लिए काफी फायदेमंद है।

ऐसे में फटे हुए दूध के पानी के फायदे और उसके इस्तेमाल के कुछ शानदार तरीके जानें।

गिनरल्स और विटामिन से भरपूर है फटे हुए

दूध के पानी में-प्रोटीन, कॉलेहाइट्र, फेट, कैल्शियम और लैन्कट्रेट एसिड के अलावा

प्रचुर मात्रा में कई तरह के

प्रायोजन और विटामिन पाए जाते हैं।

इसका काफी जाहिर है कि दूध से

पर्याप्त बीमारियों से









## पीसीसी में बढ़ेंगे पदाधिकारी, 42 से बढ़कर 70 तक संभव

चुनावी साल के कारण मिलेगा नए चेहरों को मौका, मंत्री-बोर्ड-निगम पदाधिकारी हटेंगे

जयपुर, 1 फरवरी (एजेंसियां)।

चुनावी साल में संगठन को चुनत-दुरुस्त करने में जुटी कांग्रेस में फरवरी का महीना नियुक्तियों के लिए हाजर से महत्वपूर्ण होगा। इस माह जहां प्रदेश कांग्रेस कमेटी की मौजूदा कार्यकारिणी का विस्तार होगा, वहां जिलाध्यक्षों की नियुक्तियों का काम भी पूरा होगा। कांग्रेस सूत्र बताते हैं कि नए नियुक्त किए जाने वाले प्रदेश कांग्रेस पदाधिकारियों के चयन का काम लगभग पूरा हो चुका है। जल्द ही घोषणा संभव है।

कांग्रेस सूत्रों के अनुसार लंबे समय से प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पुनर्गठन का काम लंबित है। पूर्व में एक बार प्रदेश पदाधिकारियों की सूची दिल्ली में गई थी लेकिन वह प्रधारी सुवर्णजिंदर सिंह रंधावा के आवाज-उपाध्यक्ष शामिल है।

सभी वर्गों को साधने के लिए पीसीसी में पदाधिकारियों के चयन की कवायद

कांग्रेस इस साल चुनाव को देखते हुए प्रदेश पदाधिकारियों की सूची में बदलारी करके सभी वर्गों को सधेंगे। पिछली कार्यकारिणी में से वे पदाधिकारी बाहर होंगे जो



मौजूदा पदाधिकारियों में से कुछ का हो सकता है प्रमोशन

संगठन और सरकार में दो पदों पदाधिकारियों में महेंद्रजीत सिंह मालवीय, राजेंद्र चौधरी, गोविंद राम मेघवाल, रामलाल जाट, जीआर खाटिया, हाकम अली, लाखन मीणा सहित कई लोग आ रहे हैं। इनमें से कुछ सरकार में मंत्री और बोर्ड निगमों में नियुक्त दी जा चुकी है। उदयपुर संकल्प के लिए वर्ष-एक पद का विस्तार से एक अध्यक्ष-उपाध्यक्ष नियुक्त करने के कारण इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं। सुत्रों का कहना है कि चुनावी साल के द्वारा प्रदेश कमेटी के कार्यकारियों के स्थान पर नए लोगों को मौका मिलेगा। उदयपुर

संकल्प के द्वारे में आने वाले पदाधिकारियों में महेंद्रजीत सिंह मालवीय, राजेंद्र चौधरी, गोविंद राम मेघवाल, रामलाल जाट, जीआर खाटिया, हाकम अली, लाखन मीणा सहित कई लोग आ रहे हैं। इनमें से कुछ सरकार में मंत्री और बोर्ड निगमों में नियुक्त दी जा चुकी है। उदयपुर संकल्प के लिए वर्ष-एक पद का विस्तार से एक अध्यक्ष-उपाध्यक्ष नियुक्त करने के कारण इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं। सुत्रों का कहना है कि चुनावी साल में कुछ वर्गों को साधने के

लिए न सिर्फ मौजूदा पदाधिकारियों को प्रमोट करके महासचिव और उपाध्यक्ष बनाया जा सकता है बल्कि प्रदेश सरकार के कदावर नेताओं को भी कार्यकारिणी में मौका मिल सकता है। उदाहरण के लिए आदिवासी बेल्ट को फोकस में रखकर महासचिव मार्गीलाल गांधियां की उपाध्यक्ष बनाए। जाने की सभानाहा है। इसी प्रकार मौजूदा सचिवों में से तीन-चार को प्रमोट करके महासचिव बनाया जा सकता है।

प्रवक्ताओं की संख्या बढ़ी गांग्रेस की प्रदेश टीम में अभी दो प्रवक्ता हैं। माना जा रहा है कि चुनावी साल के कारण प्रवक्ताओं की संख्या बढ़ी। सुत्र बताते हैं कि जो दो या तीन नए प्रवक्ता बनाए जा चुके हैं। अभी 88 बल्कि अध्यक्ष और नियुक्त किए जाने होते हैं।

जिलाध्यक्षों की घोषणा भी जल्द संभव

गोविंद सिंह डोलासरा के प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद 13 जिलाध्यक्ष नाम बनाए गए थे। उदयपुर संकल्प के कारण इसीका देने के संपर्क हो गये। जयपुर और कोटा में रहने के कारण इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं। सुत्रों का कहना है कि चुनावी साल में कुछ वर्गों को साधने के

प्रवक्ताओं की संख्या बढ़ी।

जिलाध्यक्षों की घोषणा भी जल्द संभव

सरकार को चार साल हो चुके हैं लेकिन विधानसभा में अभी भी उपाध्यक्ष बनने के बाद 13 जिलाध्यक्ष नाम बनाए गए थे। उदयपुर संकल्प के कारण इसीका देने के संपर्क हो गये। जयपुर और कोटा में रहने के बानाए गए थे। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं। सुत्रों का कहना है कि चुनावी साल में जिलाध्यक्ष अतिरिक्त होंगे। कांग्रेस में कुछ जिलाध्यक्ष 43 में से 35 जिलाध्यक्ष नए बनेंगे।

विधानसभा में भी दो पद खाली

जिलाध्यक्षों की घोषणा भी जल्द संभव

गोविंद सिंह डोलासरा के प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद 13 जिलाध्यक्ष नाम बनाए गए थे। उदयपुर संकल्प के कारण इसीका देने के संपर्क हो गये। जयपुर और कोटा में रहने के बानाए गए थे। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं। सुत्रों का कहना है कि चुनावी साल में जिलाध्यक्ष अतिरिक्त होंगे।

विधानसभा को इस्तीफा दिया था। क्योंकि मैंने कांग्रेस की सरकार बचाई, किसी व्यक्ति विशेष की नहीं।

मुझे टिकट राहल गांधी ने दिया

और जीता भी सोनिया, राहल,

पिंको की बजह से हूँ। विध्यूड़ी

में उन 102 विधायकों में तो

शामिल हूँ, जिन्होंने सरकार

पर एक संकट के समय

बचाई थी, लेकिन उन 90

विधायकों में नहीं हूँ, जिन्होंने मिल सकती है।

## विधायक राजेंद्र सिंह ने अपनी ही सरकार पर बोला हमला

कहा-मैंने कांग्रेस की सरकार बचाई, किसी व्यक्ति की नहीं, ईमानदार मंत्रियों की नहीं चलती



मौका आया तो हम जैसों को नकार कर उनको बतजो दी, जिनको जनता नकार चुकी है।

मैं तो पार्टी से मांग करूँगा कि जब राहुल गांधी पढ़ छोड़ सकते हैं तो ऐसे हारे हुए लोगों को भी अब सिर्फ मार्गदर्शक मंडल में शामिल हो। विध्यूड़ी में ईमानदार मंत्रियों की नहीं चलती है। आरटीओ व शीर मामले की सीधीआई जांच होनी चाहिए।

विदेश भागे आरोपियों की इंटरपोल से मदद लेकर तुरंत गिरवाही करें। परिवहन विभाग भ्रष्टाचार विभाग बन गया। मैं सीधे सोनिया की बताऊंगा और विस अध्यक्षों को घोषित करें। जिले से कांग्रेस की सरकार बचाई, किसी व्यक्ति विशेष की नहीं।

मुझे टिकट राहल गांधी ने दिया

और जीता भी सोनिया, राहल,

पिंको की बजह से हूँ। विध्यूड़ी

में उन 102 विधायकों में तो

शामिल हूँ, जिन्होंने सरकार

पर एक संकट के समय

बचाई थी, लेकिन उन 90

विधायकों में नहीं हूँ, जिन्होंने

मिल सकती है।

## सरकार के खिलाफ 8 दिनों से धरने पर बैठे किरोड़ीलाल

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने दिया

समर्थन, बोले - सीबीआई जांच कराएं सीएम गहलोत

जयपुर, 1 फरवरी (एजेंसियां)। केवल वार्ता रेपिटरी के चलते दूर-दराज के इलाकों में प्रशासनिक तंत्र को चलाना बहुत मुश्किल है। यह बात कई बार केन्द्र के सामने स्वरूप मुश्किली अस्तीकी आ रही है।

गहलोत अपने पिछले दो मासों में भी केन्द्र के साथ विभिन्न मामलों पर एक सुनियों को उठाते रहे हैं। दो कार्यकाल में बोर्ड निगमों में भी केन्द्र के लिए भारी प्रबल आ रहा है। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका देने के बाद भी अभी काम कर रहे हैं।

जयपुर रेपिटरी के लिए एक सुनियों को उठाते रहे हैं। इसी प्रकार इसीका





